संपादकीय

रोजगार सृजन से संभव विकसित भारत का संकल्प

केंद्रीय सांख्यिकी एवं कार्यान्वयन मंत्रालय की हालिया रिपोर्ट चिंता बढ़ाने वाली है, जिसमें गत दिसंबर में बेरोजगारी दर बढ़कर 4.8 फीसदी होने की बात कही गई है। भारत दुनिया में युवाओं के देश के रूप में जाना जाता है। लेकिन हम इस युवा शक्ति का भरपूर उपयोग राष्ट्र विकास में नहीं कर पा रहे हैं। चिंता की बात यह भी है कि देश के शहरी क्षेत्र में पंद्रह वर्ष से अधिक आयुवर्ग के युवाओं में बेरोजगारी की दर गांवों के मुकाबले ज्यादा है। जहां शहरों में यह प्रतिशत बढ़कर 6.7 फीसदी हुआ है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र में यह 3.9 फीसदी स्थिर है। हाल ही के वर्षों में बेरोजगारी देश में बड़ा मुद्दा रहा है, जो भारत जैसे विकासशील देश के हित में नहीं है। किसी भी अर्थव्यवस्था में विकास दर तभी सार्थक होगी, जब रोजगार के नये मौके उपलब्ध हो रहे हों। नीति-नियंताओं को आत्ममंथन करना होगा कि दुनिया में सबसे तेज गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था में रोजगार के नये अवसर क्यों नहीं बन रहे हैं। सरकारें सुनिश्चित करें कि युवाओं को देश की तरक्की में योगदान देने का अवसर मिले। यदि बेरोजगारी की दर बढ़ रही है तो इसके मायने हैं कि संगठित और असंगठित क्षेत्र में नौकरी के मौके बढ़ नहीं रहे हैं। कहा जा रहा है कि औद्योगिक क्षेत्रों में एआई और डिजिटलीकरण के चलते भी नौकरियां घटी हैं। तो क्या हम इस चुनौती के लिये अपने युवाओं को तैयार कर रहे हैं। निश्चित रूप से देश के नीति-नियंताओं को मंथन करना चाहिए कि 'आत्मनिर्भर भारत' और 'स्किल इंडिया' जैसे अभियानों के जमीनी परिणाम उत्साहवर्धक क्यों नहीं हैं? युवाओं की कौशल विकास कार्य में में भागीदारी के बावजूद रोजगार के मौके क्यों नहीं बढ़ रहे हैं? क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था समय के साथ कदमताल नहीं कर पा रही है। विडंबना यह भी है कि बढ़ती आबादी के बावजूद सरकारी क्षेत्र की नौकरियां कम हो रही हैं। युवाओं की शिकायत होती है कि सरकारी नौकरियों में भर्ती प्रि या में तमाम तरह की विसंगतियां व्याप्त हैं। वे परीक्षा प्रणाली पर भी सवाल उठाते रहे हैं। निस्संदेह, बढ़ती बेरोजगारी हमारे विकास के मापदंडों पर भी सवाल खड़ी करती है। निश्चित रूप से संतुलित आर्थिक विकास की सार्थकता के लिए जरूरी है कि देश में प्रति व्यक्ति आय बढ़े तथा आर्थिक असमानता भी दूर हो। तेज विकास दर के साथ लोगों के जीवन में खुशहाली भी आनी चाहिए। रोजगार के अवसर बढ़ने से ही समाज में खुशहाली आ सकती है। जब देश में रोजगार के मौके बढ़ेंगे तो समाज में वास्तविक समृद्धि आ सकती है। रोजगार के अवसर बढ़ने से उत्पादकता बढ़ेगी और महंगाई पर नियंत्रण पाने में भी मदद मिलेगी। निस्संदेह, बढ़ती य शक्ति भी अर्थव्यवस्था को गति देती है। निर्विवाद रूप से बेरोजगारी कम किए बिना हम देश के सौ साल पूरे होने तक विकसित भारत का लक्ष्य मुश्किल से हासिल कर पाएंगे। हमें एआई व डिजिटल चुनौती के मुकाबले के लिए युवाओं का कौशल विकास तेज करना चाहिए।

विनोद शर्मा, संपादक

स्त्री की चुनौतीपूर्ण पहलों के साथ जुड़ा उम्मीदों का कारवां

जब
महिला लिखती है
कि वह घर छोड़ने वाली,
अकेले यात्रा करने वाली...
अपने परिवार में पहली है तो वह
वास्तव में वह उन खतरों को व्यक्त
कर रही है जो इस स्वीकृति में छुपे हुए
हैं। इसके बावजूद इस ट्रेंड के स्वर में
हताशा का भाव नहीं है। इसमें उम्मीद है।
महिलाएं सिर्फ दर्द को बयान नहीं कर रही हैं
बल्कि एक दूसरे के लिए चीयर कर रही हैं
और जो कुछ उनकी दादियों व मांओं को बर्दाश्त
करना पड़ा उस पर दुःख व्यक्त कर रही हैं। फिर
भी 'पहला कदम' ज़बरदस्त व्यक्तिगत कीमत
पर आता है। नया कदम बढ़ाने की निर्भयता:
अगर हज़ारों महिलाएं अपने परिवार में शिक्षा,
स्वायत्तता, आर्थिक स्वतंत्रता आदि हासिल
करने वाली पहली महिला हैं तो आगे की राह
एकदम स्पष्ट है। इस चक्र को तोड़ने के लिए
हमें अधिक महिलाओं की ज़रूरत है।
लेकिन साथ ही सिस्टम्स की भी-
क़ानूनी, आर्थिक, सामाजिक यह
सुनिश्चित करने के लिए कि 'पहला
कदम' उठाने वालियों को भारी
व्यक्तिगत कीमत न
चुकानी पड़े।

जब कोई महिला अपने परिवार की परम्परा से हटकर अपने बल पर प्रथम प्रयास करती है, तो उसमें विजय भाव के साथ रिश्तों में तल्खी भी शामिल होती है। चाहे महिला का वह 'पहला कदम' शिक्षा-रोजगार से जुड़ा हो, रिश्तों से या फिर सोलो ट्रिप पर जाने से। लीक से अलग पहल सशक्तिकरण का प्रयास नहीं बल्कि सामूहिक चुनौती होता है। इस पहल में सिस्टम का साथ भी चाहिये। खास बात ये कि सोशल साइट पर 'परिवार की पहली महिला' के ट्रेंड के स्वर में हताशा नहीं, उम्मीद है। कुछ दिन पहले एक उत्साही महिला ने एक्स पर अपनी सुंदर सेल्फी पोस्ट की, इस कैप्शन के साथ- 'परिवार की पहली महिला जो बिना पति के यात्रा कर रही है'।

इस मासूम सी जानकारी को देते हुए उसने कल्पना भी न की होगी कि आगे क्या होने वाला है। कुछ ही घंटों में उसकी पोस्ट से 'पहले कदम' की बाढ़ आ गई। हज़ारों महिलाओं ने लिखा- परिवार की पहली ग्रेजुएट, विदेश में बसने वाली परिवार की पहली महिला, अपने नाम पर प्रॉपर्टी खरीदने वाली परिवार की पहली महिला, परिवार की पहली अविवाहिता, घर छोड़ने वाली पहली, जिस पुरुष ने मेरे साथ कुछ गलत किया उसे थप्पड़ मारने वाली पहली... यह सिलसिला इतना लम्बा चला कि सोशल मीडिया पोस्ट्स की जगह ऐसा महसूस होने लगा कि एक पीढ़ी अपने परिवार में उठाये गये पहले क्रांतिकारी कदम का इतिहास बयान कर रही है। **कुछ हासिल करने व कुछ छोड़ने की खुशी:** जब कोई महिला अपने परिवार की

परम्परा से कुछ अलग हटकर अपने बल पर प्रथम प्रयास करती है, तो उसमें विजय भाव के साथ रिश्तों में, कम या कई बार कुछ ज्यादा, तल्खी भी शामिल होती है। खानदानी परम्परा अनुमति व प्रतिबंध की विरासत होती है कि क्या बर्दाश्त किया और किस चीज़ को मना किया गया। मैंने (लेखिका) भी पोस्ट किया था- मैं अपने खानदान की पहली महिला पोस्ट-ग्रेजुएट हूं, जहां महिलाओं का खामोश व घर की चारदीवारी में रहना परम्परा थी। इसे लिखते हुए मुझे महसूस हुआ कि मैं स्वयं को मुबारकबाद नहीं दे रही हूं बल्कि एक उपलब्धि को स्वीकार कर रही हूं। पहली बार कुछ करना सिर्फ कुछ हासिल करना नहीं होता है। वह अब से पहले जो होता रहा उस बोझ को उतारकर फेंक देना होता है, जिससे इंकार किया गया, जिससे पीढ़ियों को नुकसान पहुंचा और जो कुछ बहला-फुसलाकर गलत किया गया, उस सब से मुक्ति पाना होता है। आज़ाद होना होता है, न दिखायी देने वाली गुलामी की ज़ंजीरों से। **साहसिक पहल पर अपनों की प्रतिक्रिया:** अधिकतर महिलाओं के लिए पहली जंग मुश्किल से ही सार्वजनिक होती है यानी वह पब्लिक में नहीं बल्कि घर के भीतर होती है। जिस जगह सुरक्षा मिलनी चाहिए, वही दबाव व खामोश हिंसा का पहला स्थान बनता है। शिक्षा पर सवाल उठाये जाते हैं- इतना पढ़कर क्या करोगी, आखिर में तो घर व बच्चों को ही संभालना है। कहीं आने-जाने पर पहरे लगाये जाते हैं- वहां तुम अकेले कैसे जा सकती हो। महत्वाकांक्षा को खराब चरित्र के रूप में देखा जाता है- शरीफ घरों की औरतें नाच-गाने से दूर रहती हैं। अनमेल विवाह को किस्मत बताया जाता है- निभाओ, तुम्हारे नसीब में यही लिखा था। यह सब कुछ सुरक्षा की भाषा में लपेटकर किया जाता है, ताकि नियंत्रण के इरादों पर पर्दा पड़ा रहे। इसलिए लीक से कुछ अलग हटकर चुनना सशक्तिकरण का व्यक्तिगत प्रयास नहीं होता बल्कि सामूहिक 'युद्ध घोष' होता है। यही वजह है कि 'परिवार में पहली' पर इतनी ज़बरदस्त प्रतिक्रिया हुई। इससे इस तथ्य का पर्दाफाश हुआ कि स्वायत्तता का वितरण आज भी कितना असमतल है और वह भी उस देश में जो प्रगति पर अपनी पीठ थपथपाता है। **शिक्षा और रोजगार के बीच फासला:** नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री अभिजीत बनर्जी ने भारतीय अर्थव्यवस्था में हाल ही में एक ट्रेंड की पहचान की, जिसे वह 'चिंताजनक विरोधाभास' कहते हैं, कि महिला शिक्षा के स्तर में तो निरंतर वृद्धि हो रही है, लेकिन श्रम बल में महिलाओं की हिस्सेदारी स्थिर है या कम होती जा रही है। यह विरोधाभास न रहे अगर हम यह मान लें कि शिक्षा स्वतः ही आज़ादी में तब्दील हो जाती है, जबकि ऐसा होता नहीं है। पितृसत्तात्मकता में गढ़ी घरेलू उम्मीदों पर डिग्रियों से विराम नहीं लगता है। स्किल गतिशीलता की गारंटी नहीं जब घर में महिलाओं को केयर वर्क व सामाजिक कलंक निरंतर तोड़ते रहते हैं। जो महिलाएं 'परिवार में पहला कदम' उठाने की घोषणा कर रही हैं, वह एक तरह से इसी विरोधाभास में रह रही हैं- शिक्षित, सक्षम और इसके बावजूद बाहर निकलने के हक को हासिल करने के लिए दर्द भरी जंग लड़ने को मजबूर। **उम्मीद का भाव:** वैश्विक स्तर पर घर अब भी महिलाओं के लिए सबसे खतरनाक जगह बना हुआ है। ड्रग्स व अपराध से संबंधित संयुक्त राष्ट्र कार्यालय के अनुसार दुनियाभर में महिलाओं की जो हत्याएं होती हैं, उनमें से अधिकांश कत्ल उनके करीबी पार्टनर्स या परिवार के सदस्य करते हैं। आंकड़ों के मुताबिक, यह 'पहला कदम' उठाने वाली किन चुनौतियों का सामना कर रही हैं।

इजराइली नागरिकों की हत्या पर फलस्तीनियों को अब मृत्युदंड

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विरोध

यरूशलम में ऐतिहासिक फैसला नेसेट में प्रधानमंत्री नेतन्याहू की मौजूदगी में 62-48 से पास हुआ विधेयक, वेस्ट बैंक में इजराइलियों की हत्या पर अनिवार्य होगी सजा। इजराइल की संसद नेसेट ने सोमवार को एक बड़ा और विवादित फैसला लेते हुए उस कानून को पारित कर दिया है, जिसके तहत इजराइली नागरिकों की हत्या के दोषी फलस्तीनियों को मृत्युदंड दिया जा सकेगा। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की उपस्थिति में हुए इस मतदान के बाद मानवाधिकार संगठनों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने इसकी कड़ी निंदा की है। आलोचकों ने इस कानून को भेदभावपूर्ण और अमानवीय करार दिया है।

नए कानून के प्रावधानों के अनुसार, वेस्ट बैंक में तथाकथित राष्ट्रवादी हत्याओं के दोषी फलस्तीनियों के लिए फांसी के जरिए मृत्युदंड देना अनिवार्य होगा। हालांकि कानून में यह उल्लेख किया गया है कि यह इजराइली नागरिकों पर भी लागू हो सकता है, लेकिन कानूनी विशेषज्ञों का स्पष्ट कहना है कि व्यवहार में यह केवल फलस्तीनियों को ही निशाना बनाएगा। 120 सदस्यीय संसद में इस विधेयक के पक्ष में 62 और विरोध में 48 वोट पड़े। परिणाम घोषित होते ही सत्ता पक्ष के सांसदों ने खुशी जताई, जबकि विपक्षी खेमे ने इसे खतरनाक बताया। 7 अक्टूबर के कैदियों पर नहीं होगा असर प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि यह कानून पूर्व प्रभाव से लागू नहीं होगा। इसका सीधा अर्थ यह है कि वर्तमान में जेलों में बंद हमास के लड़ाके या 7 अक्टूबर 2023 के हमलों से जुड़े आरोपियों पर इस कानून के तहत कार्रवाई नहीं की जा सकेगी। राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री इतामार बेन-गवीर इस कानून को पारित कराने के मुख्य पैरोकारों में से एक रहे हैं। उन्होंने इसे इजराइली नागरिकों की सुरक्षा के लिए एक ऐतिहासिक कदम बताया है। **सुप्रीम कोर्ट में चुनौती और कानूनी पेंच:** कानून पारित होते ही एसोसिएशन फॉर सिविल राइट्स इन इजराइल ने इसे देश की सर्वोच्च अदालत में चुनौती दी है। संगठन का तर्क है कि इजराइली संसद को वेस्ट बैंक जैसे गैर-संप्रभु क्षेत्र के निवासियों के लिए इस तरह के कानून बनाने का कोई कानूनी अधिकार नहीं है। जानकारों का मानना है कि इस कानून से क्षेत्र में न केवल कानूनी लड़ाई तेज होगी, बल्कि पहले से जारी हिंसा और तनाव में भी इजाफा हो सकता है। फिलहाल यह कानून 30 दिनों के भीतर लागू होना प्रस्तावित है।

शहीद जननायक टंट्या भील की जन्म स्थली बड़ौदा अहीर में पहली बार पहुंचेंगे राज्यपाल 4अप्रैल को

माननीय राज्यपाल के दौरे को लेकर विधायक मोरे और कलेक्टर ने संभाली तैयारियों की कमान

पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा।

शहीद जननायक टंट्या मामा भील की जन्म नगरी पंधाना विधानसभा क्षेत्र के ग्राम बड़ौदा में प्रथम बार माननीय राज्यपाल का दौरा होने जा रहा है। आगामी 4 अप्रैल को प्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई पटेल के प्रस्तावित पंधाना दौरे को लेकर भाजपा संगठन और प्रशासन पूरी तरह एक्टिव मोड में नजर आ रहा है। समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि कार्यक्रम को भव्य और ऐतिहासिक बनाने के लिए तैयारियां तेज कर दी गई हैं। इसी क्रम में मंगलवार को पंधाना क्षेत्र की विधायक श्रीमती छाया मोरे ने कलेक्टर ऋषव गुप्ता व प्रशासन की टीम ने ग्राम बड़ौदा अहीर पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

भाजपा नेतृत्व के मार्गदर्शन में कार्यक्रम स्थल को लेकर विशेष तैयारियां की जा रही हैं, ताकि राज्यपाल के स्वागत में कोई कमी न रहे। पंधाना विधायक छाया मोरे ने जननायक टंट्या भील के स्मारक स्थल पर पहुंचकर व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि 4 अप्रैल को माननीय राज्यपाल के साथ ही प्रदेश के संस्कृति एवं पर्यटन एवं जिले के प्रभारी मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी इस कार्यक्रम में शामिल होंगे। इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं में भी खासा उत्साह देखा गया और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सक्रिय भागीदारी नजर आई।

राज्यपाल महोदय के बड़ौदा आगमन पर भाजपा संगठन के संभाग प्रभारी सुरेंद्र शर्मा, जिला अध्यक्ष राजपाल सिंह तोमर, सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल के साथ ही जिले के चारों विधायक, खंडवा महापौर, जिला पंचायत अध्यक्ष अन्य जनप्रतिनिधि व पार्टी के पदाधिकारी के साथ बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी भी उपस्थित होंगे।राज्यपाल महोदय के आगमन के निरीक्षण के दौरान विधायक छाया मोरे,कलेक्टर ऋषव गुप्ता, पंधाना एसडीएम दिनेश सावले, जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सुरेश टेमने मंडल अध्यक्ष फकीरचंद कुशवाहा, चुन्नीलाल नेभनानी सहित अन्य प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे।

जैन धर्म के सबसे बड़े धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन दादा जी की नगरी में 11 अप्रैल से प्रारंभ

आदित्य सागर जी महाराज के सानिध्य में अयोध्या नगरी तापड़िया गार्डन में 11 से 16 अप्रैल के बीच भव्य पंच कल्याणक महोत्सव

पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा।

जैन समाज के प्रमुख संत श्रमण 108 मुनि श्री आदित्य सागर जी महाराज संसंघ का मंगल विहार इंदौर की जैन कॉलोनी से धर्म नगरी खंडवा के लिए प्रारंभ हो गया है। यह पद विहार 1008 श्री आदिनाथ जिन बिम्ब पंच कल्याणक महा महोत्सव के पावन आयोजन के लिए किया जा रहा है। समाज के सचिव सुनील जैन ने बताया कि पंचकल्याणक महोत्सव को लेकर खंडवा में काफी उत्साह है और सभी समाज जनों ने अपने दायित्व को लेकर अपने-अपने कार्य इस धार्मिक अनुष्ठान के लिए आरंभ कर दिए हैं।

मुनिश्री के विहार को लेकर श्रद्धालुओं में गहरा उत्साह और आस्था का वातावरण देखा जा रहा है। खंडवा में प्रस्तावित पंच कल्याणक महोत्सव को लेकर समाजजन तैयारियों में जुटे हुए हैं और आयोजन को भव्य रूप देने के प्रयास किए जा रहे हैं। समाज के सचिव सुनील जैन, प्रचार मंत्री प्रेमांशु चौधरी, पंकज सेठी ने बताया कि पंचकल्याणक महोत्सव के सभी महत्वपूर्ण पात्रों का चयन हो चुका है। पंचकल्याणक स्थल अयोध्या नगरी में भी कार्य प्रारंभ हो चुका है। इंदौर से मुनिश्री को खंडवा लाने के लिए श्रद्धालु एंव मातृशक्ति इंदौर पहुंचकर विहार में शामिल हो गई है। खनीय है कि जैन संत अपनी यात्रा पैदल करते हैं और प्रतिदिन 15 से 20 किलोमीटर चलते है उस मान से 8 अप्रैल को मुनि श्री आदित्य सागर जी महाराज का ससंघ मंगल आगमन खंडवा खंडवा में होगा। इस दौरान खंडवा से विहार हेतु पंचकल्याणक के प्रमुख पात्र सौधर्म इंद्र संजय वंदना, चंदा बाई कासलीवाल, पंचकल्याणक के शुभारंभ ध्वजारोहणकर्ता कैलाश पहाड़िया, अर्पित भैया एवं मनीष जैन पत्रकार की विशेष उपस्थिति रही। कैलाश पहाड़िया ने इंदौर पहुंचकर पंचकल्याणक की अभी तक की तैयारी की चर्चा मुनि श्री से कर आशीर्वाद प्राप्त किया। मुनिश्री के इंदौर से विहार कर खंडवा आगमन के बीच प्रतिदिन धार्मिक माहौल और अधिक सशक्त होने की उम्मीद जताई जा रही है।

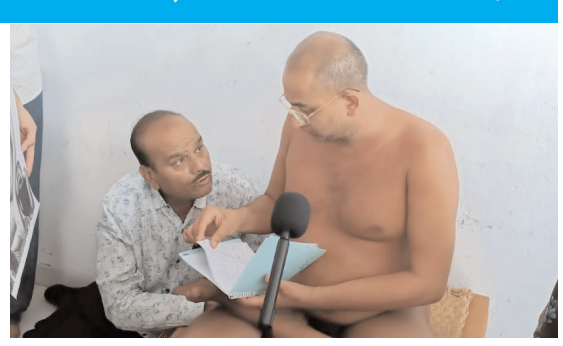

महावीर जयंती के उपलक्ष में महावीर दिगंबर जैन मंदिर में कृषि करो या ऋषि बनो की झांकी के साथ आकर्षक पालना सजाया गया

वर्धमान ग्रुप मंडल ने सभी धर्म प्रेमियों से मंदिर में बनी आकर्षक झांकि देखने का अनुरोध किया है

पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा।

जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म महोत्सव 30 मार्च को खंडवा नगर में सकल जैन समाज द्वारा धार्मिक उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। खंडवा के सभी जैन मंदिरों को आकर्षक रोशनी से सजाया गया है, वहीं मंदिरों में झांकियां के साथ भगवान महावीर का आकर्षक पालना भी सजाया गया है।

समाज के सचिव सुनील जैन ने बताया कि प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी बजरंग चौक स्थित महावीर दिगंबर जैन मंदिर में वर्धमान ग्रुप की ओर से आर्कषक झाँकी जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव भारतीय संस्कृति के आदि प्रवर्तक जिनके पुत्र भरत के नाम से ये भारत देश का नाम पड़ा । ऋषभ देव ने अपनी दोनों पुत्रियों ब्राह्मी ओर सुंदरी को लिपि ओर अंक की विद्या देकर नारी शिक्षा का संदेश दिया। भगवान आदिनाथ (राजा ऋषभ) ने आज से हजारों वर्ष पूर्व ऋषि, कृषि, कृषि वाणिज्य, शिल्प का ज्ञान दिया था। वर्धमान ग्रुप द्वारा बनाई गई झांकी में कृषि करो या ऋषि बनो की झांकी में जैविक खेती के बारे में भी दर्शाया है जो कि इस युग में जैविक

खेती का महत्व प्रदर्शित कर रहा है साथ ही झांकी में नारी शिक्षा के महत्व के साथ भगवान बालक महावीर का आकर्षक पालना भी सजाया गया जो श्रद्धा का केंद्र है। सुनील जैन ने बताया कि वर्धमान ग्रुप द्वारा महावीर दिगंबर जैन मंदिर में बनाई गई आकर्षक झांकी को बड़ी संख्या में समाज जनों ने देखा और यह झांकी अभी तीन दिनों तक और रहेगी।

भूख से बिलखते बच्चे, बेबस माता-पिता और फिर जागी इंसानियत

खंडवा बस स्टैंड पर दिनभर मदद को तरसा परिवार, शाम को समाजसेवी बनकर आए फरिश्ते

पीपुल्स प्रवक्ता खंडवा।

शहर के मुख्य बस स्टैंड पर सोमवार को एक ऐसा दृश्य सामने आया, जिसने हर संवेदनशील इंसान का दिल झकझोर दिया। तीन मासूम बच्चे भूख-प्यास से तड़पते रहे, माता-पिता बेबसी में लोगों से मदद की गुहार लगाते रहेज लेकिन दिनभर कोई आगे नहीं आया। समाजसेवी सुनील जैन ने बताया कि बिहार के मोतिहारी निवासी प्रमोद अपनी पत्नी चंदा और तीन छोटे बच्चों के साथ किसी गंभीर परेशानी के चलते

खंडवा पहुंचे थे। हालात इतने बिगड़ चुके थे कि परिवार के पास न खाने को कुछ था और न ही आगे जाने का कोई साधन। बस स्टैंड पर सुबह से शाम तक इंतजार करते-करते बच्चे बिलखने लगे, लेकिन भीड़ में उनकी पीड़ा अनसुनी ही रही।

शाम होते-होते इंसानियत ने करवट ली। वर्षों से बस स्टैंड पर कुली और समाज सेवा कर रहे मुख्तियार मनिहार की नजर जब इस परिवार पर पड़ी, तो उन्होंने तुरंत समाजसेवियों को सूचना दी। इसके बाद नारायण बाहेती, सुनील जैन, गणेश भावसार और कपिल शर्मा मदद के लिए आगे आए। समाजसेवियों ने न सिर्फ परिवार को भोजन उपलब्ध कराया, बल्कि बच्चों को अपने हाथों से बैठाकर खाना खिलाया। भूखे बच्चों के चेहरे पर आई राहत ने वहां मौजूद लोगों की आंखें नम कर दीं। समाजसेवी सुनील जैन ने कहा, भूखे को रोटी और प्यासे को पानी देना ही सबसे बड़ा धर्म है। भगवान महावीर स्वामी की जयंती पर इस परिवार की सेवा कर मन को सच्ची शांति मिली। इस दौरान वन स्टॉप शासकीय टीम भी मौके पर पहुंची और परिवार की काउंसलिंग की। बच्चों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने का सुझाव दिया गया, लेकिन माता-पिता ने साथ रहने की इच्छा जताई।

स्वामी, भाग्यमीडिया पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक राजेश शर्मा द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप 11 प्रेस काम्पलेक्स जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित कर, जी-11 प्रथम तल गोयल निकेत जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित, पिन-462011, संपादक : विनोद शर्मा, फोन नं. 0755-4512708, पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार सभी मामलों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा । RNI No. MPHIN/2016/68059